

प्रेषक,

पी0सी0 शर्मा,
प्रमुख सचिव,
उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

- 1- समस्त प्रमुख सचिव/सचिव,
उत्तरांचल शासन।
- 2- समस्त विभागाध्यक्ष,
उत्तरांचल।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

देहरादून : दिनांक: 31 अगस्त, 2006

विषय: राज्य प्राकृतिक संसाधन प्रणाली, उत्तरांचल (State Natural Resources Management System) का गठन किये जाने के संबंध में।

महोदय,

उत्तरांचल अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र की गवर्निंग बॉडी की बैठक दिनांक: 27.01.2006 में लिये गये निर्णय के क्रम में प्रदेश के बहुमुखी विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों के समुचित एवं सुनियोजित दोहन, विकास एवं प्रबन्धन तथा विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का न्यूनीकरण में सुदूर संवेदन एवं जी0आइ0एस0 तकनीक की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुये महामहिम श्री राज्यपाल प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्रणाली, उत्तरांचल के गठन की सहर्ष स्वीकृति इस आशय से प्रदान करते हैं कि प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा इस नवीनतम तकनीक के उपयोग से जनसाधारण को लाभान्वित किया जा सके।

2- उत्तरांचल के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अधीनस्थ उत्तरांचल अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, USAC को प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्रणाली उत्तरांचल के विभिन्न कार्य संचालन हेतु नोडल एजेंसी नामित किये जाने की भी श्री राज्यपाल सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं। प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध प्रणाली उत्तरांचल का क्रियान्वयन निम्नानुसार होगा :-

2.1- उत्तरांचल राज्य में, भारत सरकार के नेशनल नेचुरल रिसोर्सेज मैनेजमेंट सिस्टम (एन.एन.आर.एम.एस) के अनुरूप उत्तरांचल स्टेट नेचुरल रिसोर्सेज मैनेजमेंट सिस्टम का गठन एक समन्वित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध प्रणाली के रूप में किया जाना प्रस्तावित है। जिसके अन्तर्गत उत्तरांचल के समस्त प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, विकास एवं प्रबन्धन सम्बन्धी आंकड़ों का सृजन सुदूर संवेदन, जी.आई.एस. तथा पारम्परिक तकनीक के समन्वय से किया जाएगा।

2.2- प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्रणाली, उत्तरांचल का संचालन एवं नियन्त्रण मुख्य सचिव, उत्तरांचल शासन की अध्यक्षता में गठित एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा विभिन्न प्राकृतिक संसाधन क्षेत्रों सम्बन्धी गठित उप समितियों के माध्यम से होगा।

(ग) उच्च स्तरीय समिति प्रदेश के विभिन्न उपयोग कर्ता विभागों User Department की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधन जैसे परती भूमि, भू-उपयोग/भू-आच्छादन, कृषि एवं मृदा संसाधन, वन, जल संसाधन, शहरी विकास इत्यादि सम्बंधी समुचित आंकड़ों के सृजन एवं जी.आई. एस. के माध्यम से सामाजिक/आर्थिक आंकड़ों के साथ एकीकृत करने सम्बंधी दिशा-निर्देश भी प्रदान करेगी।

(घ) उच्च स्तरीय समिति की बैठक वर्ष में दो बार होगी।

2.5- प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्रणाली, उत्तरांचल के क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित उप समितियाँ गठित की जायेंगी, जिनकी अध्यक्षता प्रदेश सरकार के सम्बन्धित विभागों के प्रमुख सचिव/सचिव द्वारा की जायेगी।, उपसमितियों हेतु सदस्यों का चयन उच्चस्तरीय समिति द्वारा किया जायेगा।

- | | | |
|----|---------|--|
| 1. | उपसमिति | कृषि, उद्यान एवं मृदा |
| 2. | उपसमिति | जल संसाधन |
| 3. | उपसमिति | वन एवं पर्यावरण |
| 4. | उपसमिति | भू-संसाधन नगरीय सर्वेक्षण एवं भू उपयोग |
| 5. | उपसमिति | नियोजन, ग्राम्य विकास एवं एकीकृत सर्वेक्षण |
| 6. | उपसमिति | आपदा प्रबन्धन |
| 7. | उपसमिति | तकनीकी विस्तार, प्रशिक्षण एवं सेवायोजन। |

राज्य की आवश्यकतानुसार उपसमितियों की संख्या घटाई अथवा बढ़ाई जा सकती है।

2.6- उपसमितियों के दायित्व निम्नवत होंगे:

- (क) प्रदेश के समस्त प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन एवं विकास की दिशा में सुदूर संवेदन तकनीक की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
- (ख) प्रदेश के विकास में प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग एवं प्रबन्धन को दृष्टिगत रखते हुये यह तय करेगी कि इनमें कितना कार्य वर्तमान/भविष्य में सुदूर संवेदन तकनीक द्वारा प्रदान किया जा सकता है।
- (ग) पारम्परिक एवं सुदूर संवेदन तकनीक के समन्वय द्वारा संसाधन प्रबन्धन के बेहतर तरीकों को चिन्हित करेगी।
- घ) प्रदेश के संसाधन प्रबन्धन सम्बन्धी सूचना प्रणाली का आधारभूत ढांचा तैयार करेगी जो कि नगरीय सर्वेक्षण एवं भू-उपयोग की उप समिति एक अरबन इन्फार्मेशन सिस्टम तथा आपदा प्रबन्धन उप समिति एक डिसास्टर मैनेजमेन्ट सिस्टम स्थापित करने की दिशा में कार्यवाही करेगी।

2.3- प्राकृतिक संसाधन प्रणाली उत्तरांचल के संचालन हेतु एक उच्च स्तरीय समिति का गठन निम्नवत् किया जाता है :-

| | |
|---|------------|
| मुख्य सचिव उत्तरांचल शासन | अध्यक्ष |
| प्रमुख सचिव/सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव वन विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव, नियोजन | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव वित्त विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव औद्योगिक विकास | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव कृषि | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव सिंचाई विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव राजस्व विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव आवास विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव शहरी विकास | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव ग्राम्य विकास विभाग | सदस्य |
| प्रमुख सचिव/सचिव, सूचना प्रौद्योगिकी | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष वन विभाग | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष नियोजन | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष औद्योगिक विकास | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष कृषि | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष सिंचाई विभाग | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष राजस्व विभाग | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष आवास विभाग | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष शहरी विकास | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष ग्राम्य विकास विभाग | सदस्य |
| विभागाध्यक्ष, सूचना प्रौद्योगिकी | सदस्य |
| निदेशक अर्थ आब्जरवेशन सिस्टम, अन्तरिक्ष विभाग | सदस्य |
| निदेशक नेशनल रिमोट सैन्सिंग एजेन्सी हैदराबाद | सदस्य |
| निदेशक अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र अहमदाबाद | सदस्य |
| निदेशक, उत्तरांचल अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र, देहरादून | सदस्य-सचिव |

2.4- समिति के दायित्व :-

- (क)- उच्च स्तरीय समिति द्वारा प्राकृतिक संसाधन प्रणाली, उत्तरांचल के संचालन के सम्बंध में आवश्यक नीति विषयक बिन्दुओं का निर्धारण किया जाएगा।
- (ख) विभिन्न उप समितियों के गठन, अनुश्रवण एवं दिशा निर्देशन सम्बंधी कार्य किया जाएगा।

(ग) उच्च स्तरीय समिति प्रदेश के विभिन्न उपयोग कर्ता विभागों User Department की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधन जैसे परती भूमि, भू-उपयोग/भू-आच्छादन, कृषि एवं मृदा संसाधन, वन, जल संसाधन, शहरी विकास इत्यादि सम्बंधी समुचित आंकड़ों के सृजन एवं जी.आई. एस. के माध्यम से सामाजिक/आर्थिक आंकड़ों के साथ एकीकृत करने सम्बंधी दिशा-निर्देश भी प्रदान करेगी।

(घ) उच्च स्तरीय समिति की बैठक वर्ष में दो बार होगी।

2.5- प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन प्रणाली, उत्तरांचल के कियान्वयन हेतु निम्नलिखित उप समितियाँ गठित की जायेंगी, जिनकी अध्यक्षता प्रदेश सरकार के सम्बन्धित विभागों के प्रमुख सचिव/सचिव द्वारा की जायेगी।, उपसमितियों हेतु सदस्यों का चयन उच्चस्तरीय समिति द्वारा किया जायेगा।

- | | | |
|----|---------|--|
| 1. | उपसमिति | कृषि, उद्यान एवं मृदा |
| 2. | उपसमिति | जल संसाधन |
| 3. | उपसमिति | वन एवं पर्यावरण |
| 4. | उपसमिति | भू-संसाधन नगरीय सर्वेक्षण एवं भू उपयोग |
| 5. | उपसमिति | नियोजन, ग्राम्य विकास एवं एकीकृत सर्वेक्षण |
| 6. | उपसमिति | आपदा प्रबन्धन |
| 7. | उपसमिति | तकनीकी विस्तार, प्रशिक्षण एवं सेवायोजन। |

राज्य की आवश्यकतानुसार उपसमितियों की संख्या घटाई अथवा बढ़ाई जा सकती है।

2.6- उपसमितियों के दायित्व निम्नवत होंगे:

(क) प्रदेश के समस्त प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन एवं विकास की दिशा में सुदूर संवेदन तकनीक की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।

(ख) प्रदेश के विकास में प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग एवं प्रबन्धन को दृष्टिगत रखते हुये यह तय करेगी कि इनमें कितना कार्य वर्तमान/भविष्य में सुदूर संवेदन तकनीक द्वारा प्रदान किया जा सकता है।

(ग) पारम्परिक एवं सुदूर संवेदन तकनीक के समन्वय द्वारा संसाधन प्रबन्धन के बेहतर तरीकों को चिन्हित करेगी।

घ) प्रदेश के संसाधन प्रबन्धन सम्बन्धी सूचना प्रणाली का आधारभूत ढांचा तैयार करेगी जो कि नगरीय सर्वेक्षण एवं भू-उपयोग की उप समिति एक अरबन इन्फारमेशन सिस्टम तथा आपदा प्रबन्धन उप समिति एक डिसास्टर मेनेजमेन्ट सिस्टम स्थापित करने की दिशा में कार्यवाही करेगी।